महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

प्रज्ञा और विनय था बुद्धकालिन शिक्षा का आधार- प्रो. सुरजीत सिंह

बुद्धिजम और शिक्षा सत्र में बुद्धकालिन शिक्षा पर हुआ विमर्श

वक्तव्य देते हुए डॉ. सुरजीत कुमार सिंह। मंच पर दाएं से प्रो. विमलेन्द्र कुमार, डॉ. अंगराज चौधरी तथा डॉ. बेला भट्टाचार्य।

वक्तव्य देते हुए डॉ. अंगराज चौधरी। मंच पर दाएं से प्रो. विमलेन्द्र कुमार, डॉ. बेला भट्टाचार्य तथा डॉ. सुरजीत कुमार सिंह।

वर्धा दि. 31 मार्च 2012: बुद्धकालिन शिक्षा का मूलाधार था अविद्या दूर कर लोगों को प्रज्ञावान बनाना। आम आदमी की भाषा में शिक्षा प्रदान कर बहुजन हिताय बहुजन सुखाय का मूलाधार

बुद्धकालिन शिक्षा व्यवस्था में था। इस काल की शिक्षा समय और काल में प्रतिबंधित नहीं थी। इस शिक्षा व्यवस्था ने कला और संस्कृति को समृद्ध किया। उक्त विचार महात्मा गांधी अंतरराष्टीय हिंदी विश्वविद्यालय में डॉ. भदंत आनंद कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केंद्र के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. सुरजीत कुमार सिंह ने रखे।

वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में आयोजित त्रि-दिवसीय (20-31) अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी तीसरे दिन के प्रथम सत्र में 'बुद्धकालिन शिक्षा' विषय पर बोल रहे थे। सत्र की अध्यक्षता विपश्यना केंद्र, इगतपुरी के डॉ. अंगराज चौधरी ने की। इस सत्र में कोलकाता विश्वविद्यालय में पालि और बौद्ध अध्ययन विभाग की डॉ. बेला भट्टाचार्य तथा बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी में पालि विभाग के अध्यक्ष प्रो. विमलेन्द्र कुमार आदि ने विचार प्रकट किये।

प्रो. बेला भट्टाचार्य ने बुद्ध धम्म में पालि शिक्षा की बात करते हुए कहा कि धर्मानंद कोसंबी, राहुल सांकृत्यायन तथा डॉ. बी. आर. अंबेडकर ने पालि भाषा को आगे बढ़ाने का कार्य किया। इसके चलते देशभर के विभिन्न विश्वविद्यालयों में पालि का अध्ययन-अध्यापन चल रहा है। उन्होंने पालि की महत्ता को अधोरेखित करते हुए कहा कि चरित्र निर्माण, शांति स्थापना और भाईचारा को बढ़ावा देने में पालि का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रो. विमलेन्द्र कुमार ने शील, समाधि और प्रज्ञा को व्याख्यायित करते हुए कहा कि बुद्धिजम ने शिक्षा में विर्मश संस्कृति का प्रारंभ किया। अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. अंगराज चौधरी ने नालंदा की शिक्षा व्यवस्था को आदर्श माना। उन्होंने विपश्यना केंद्र द्वारा चलाए जा रहे चरित्र निर्माण के कार्यक्रमों की जानकारी भी दी। सत्र का संचालन मिथिलेश कुमार ने किया।

इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा विवि में स्थापित डॉ. भदंत आनंद कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केंद्र, डॉ. आंबेडकर अध्ययन केंद्र, डॉ. जाकिर हुसैन अध्ययन केंद्र तथा नेहरू अध्ययन केंद्र इन चार इपोक मेकिंग सेंटर्स एवं भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। संगोष्ठी के अंतिम दिन का दूसरा सत्र आदिवासी शिक्षा पर केंद्रीत था। सत्र की अध्यक्षता विवि के स्त्री अध्ययन केंद्र की प्रोफेसर इलीना सेन ने की जिसमें प्रो. रामशरण जोशी, प्रो. जोसेफ बारा, रेशमी रामधोनि तथा प्रशांत खत्री ने शोध पत्र प्रस्तुत किये।

बी. एस. मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी